REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

प्रेम कविता में प्रेमानुभूति की कसक 'तुम्हारे प्यार कीपाती'

डॉ. अरविंद कुमार
सहायक प्रोफेसर, हिंदी प्रेम किशन खन्नाराजकीय महाविद्यालय ,
जलालाबाद, शाहजहाँपुर,उत्तर प्रदेश.

प्रस्तावना :

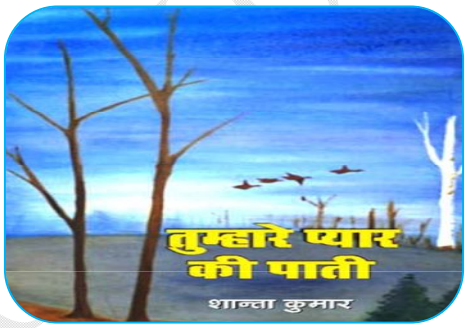

कविता कविकी अनुभूति जन्म परिस्थितियों की उपज होती है, कभी के मानस में सामाजिक पीड़ा उबाल करतीरहती है समय-समय पर यही पीड़ायें कविता के रूप में कागज पर उतर आतीहै।शांता कुमार वरिष्ठ कवि एवं रचनाकार है शांता कुमार प्रेमी और वेदना की कभी वक्त जीवन की प्रेम को कविता के रूप में वर्णित कर देना कवि हृदय शांता कुमार सेसीख सकता है।अपने वैयक्तिक प्रेम कीपीर काव्य संसार के रूप में 'तुम्हारे प्यार की पाती' 2007 शीर्षक कविता संग्रह में देखा जा सकता है।'तुम्हारे प्यार की पाती' काव्य संग्रह का प्रकाशन 2007 में हुआ। इस संग्रह में कुल 26 कविताएं संकलित हैं।यह संग्रह चार भागों में विभाजित है- प्रथम भाग में सामाजिक अनुभव एवं बराबरी असमानता को लेकर लिखी कविताएं हैं।आपातकाल में नाहन जेल में लिखी कविताएं हैं,अपनी पत्नी को लिखे पत्रों में भेजा था। 2- एवं 1953 में कश्मीरआंदोलन में हिसार जेल में 19 वर्ष की आयु में लिखी कविताएं हैं।प्रथम खंड में 10 कविताएं हैं इन 10 कविताओं', 'धुंध में शिमला',' गहराइयां','फूल लेकर आए थे', "अंत्योदय' लोग कहते हैं,'मैं और मेरा कवि', 'वह क्षण', 'मैं मैं ना रहा','अपने ही भार से', 'इस बार की होली' हैं। 'धुंध में शिमला' कविता में कवि ने शिमला नगर की शरद ऋतु का वर्णन दिन भी भाषा में करते हैं कविता कथन है-

"गुदगुदे
सफेद सफेद /नरम नरम
कुछ ठंडे/
कुछ गर्म बादलों की
अलसाई/ भटकती/ बलखाती /इधर आधे उधर जाती
तन मन से टकराती।"
(तुम्हारे प्यार की पाती, पृष्ठ संख्या 9)

यह काव्य पंक्तियां ठंडी की ऋतु के आगमन का संकेत दे रहे हैं, गुदगुदी एवं सफेद- सफेद बादल कहने का आशय है, आकाश में बादल प्रतिक्षण- प्रतिपल अपना रूप बदल रहे हैं।कुछ गर्म बादल कहने का संकेत है कि सूर्य अपनी रोशनी बिखेरा है,लोग प्रसन्न हैं। सूर्यके अस्त होने के बाद रात्र के आगमन की सूचना नई नवेली नववधू के रूप में दे रहे हैं। कहने का अर्थ है कि जिस प्रकार नई बहू ससुराल में लज्जा का अनुभव करती है। उसी प्रकार रात भी धीरे-धीरे आगमन या लज्जा का गहना पहन कर आ रही है। 'फूल लेकर आए थे' कविता समाजवादी चिंतक आंदोलनकारी एवं राजनेता जयप्रकाश नारायण के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि है। कवि शांता कुमार ने उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर शोकाकुल होकर लिखी थी।कवि उनकी अंतिम विदाई के दृश्यों का कविता के रूप में कलम बंद किया है,'फूल लेकर आए थे' कविता की प्रारंभिक पंक्तियों में स्पष्ट हो जाता है-

" गंगा के किनारे
बांस घाट की रेतीली जमीन पर
एक तरफ
जनमानस का ज्वार उमड़ा
और दूसरीतरफ गंगा का शांत पानी।"

मानव जीवन प्रेम सौंदर्य आस्था आस्था दूध से निर्मित है प्रेम में आकर्षण विकर्ण का गुण विद्यमान होता है।'वह क्षण'कविता में कवि पेशी के रूप लावण्य से आकर्षित है, तभी से कभी उसकी ओर आकर्षित है।कविकथन है-

"तुम जब दिखी थी
पहले, सबसे पहले
तुम्हारी आंखों में मुझे लगा था
कुछ है,जो मेरा है।" (वही,पृष्ठ31)

'आँखें' वैसे भी सम्मोहन का कार्य करती हैं।आंखों के चितवन कीसहसा, आकर्षण का रूप ले लेती है।अपनी उस परिचित प्रेयसी की और उनका सहज खिंचाव आकर्षित करता है। प्रेयसी. का संगीत कर देना उनके लिए एक तरह सेठिठके कदमों को आगे बढ़ादेताहै।उसी प्रथम चितवन की प्रेम की तलाश में वह भटकते हुए दिखाई पड़ते हैं।'वह क्षण'शीर्षक कविता में अन्यत्र का कवि कथन है-

" सोचा-
शायद जाते हुए
वे ही एक नाम दे जाएं
उसे /जो मैंने पहले
सबसे पहले
तुम्हारी आंखों में देखा था।" (वही, पृष्ठ संख्या 34)

कवि उस प्रथम बार के प्रेम में ही स्वयं को समाहित कर देना चाहता है।वैसे भी प्रेम एक तू एक निष्ठा एवं समर्पण चाहता है।इसलिए कवि स्वयं अपने आप को प्रेयसी के प्रेम में डुबो देना चाहता है।कवि लिखता है-

" मैं आगे बढ़ा था
तब तुम/ तुम नहीं
बस, में था
और मैं /कब का /तुम में
विलीन हो चुका था।"

LBP PUBLICATION

कवि की कविता 'में मैं ना रहा'शीर्षककविता का अवलोकन किया जा सकता है।कविप्रेयसी की राह देखना, उसके आने की प्रतीक्षा करना, प्रेयसी का ना आना, कविको बेचैन कर देता है।बिना प्रियतम के जीवन अच्छा लगता है जीवन में प्रेम वेदना, टीससे नायकका जीवन घुट घुट कर बीत रहा है।लेकिन फिर भी नायक अपने अंतस में प्रेसी के वियोग की प्रतीक्षा में

" ' प्रेम' में कोमल एवं कोमलता का भाव विद्यमान होता है।कोमल भावना ही प्रेम का उतरे करने में सहायक होती है। आंखों की चंचलता,यौवन की मादकता, रूप का मोह,कभी व्यक्ति को पददलित भी कर देता है,तो कभी उच्चायमान स्थिति में प्रवेश करा देता है।कभी के नायक को नायिका के का एक अनुभवने सहज आकर्षित कर लिया है।यही कारण है किबालों के जुड़े में बंधे फूलों की महक उन्हें उसी ओर खींचती चली जा रही है।कविलिखता है-

"तुम्हारे फूलों की महक ने
कुछ घरों को खींच लिया
वह मड़रानेलगे
और दांव लगाकर रस पीने लगे।
वे फूल/ फूल ना रहे
फलनगए
छोटे छोटे /प्यारे प्यारे/
कोमल रेशम से धीरे-धीरे बढ़ने लगे।" (वही, पृष्ठ संख्या **40**

' तुम्हारे प्यार की पाती'का द्वितीय खंड में कभी अपनी पत्नी की नहान जेल से पत्र के रूप में लिखता है।अपनी पत्नी से दूर जेल में बार-बार उन्हें इस मृत आती रहती है ।वह अपनी पत्नी को कविता के रूप में प्रेम पत्र लिखते हैं।'मैं विवस बंदी'कविता शीर्षक में अपनी व्यथा कथा को प्रेम पत्र के साथ कविता में लिखते हैं।आज मैं पूर्णतया विवश हूं क्योंकि मैं जेल में कैदी के रूप में बंद हूं। कवि का कथन है-

" मैं विवस बंदी
बंधनों में बंधनों की
बंद प्रतिमा सा !
विचारों की वयोमछूती उड़ाने
क्षणों में सिंधु पाताल चीरती
कल्पना की पैनीलकीरें खींचता
इस अनजान खामोश बस्ती में
खामोशी जहां/ खामोशहो बेहोश होती है
कल्पना की कल्पना में
कल्पना करता विचारता हूं
मैं विवश बंदी।" (वही, पृष्ठ संख्या **46**)

कवि कहना चाहता है कि हे, प्रियतम! तुम्हारे होने कीपास में अनुभूति करता हूं,जिससे मेरे जीने की इच्छा और अधिक बलवती हो जाती है।कवियह स्पष्ट करता है, शरीर रूप से हम दोनों एक दूसरे से दूर हैं, किंतु मन से एक दूसरे से दूर नहीं हूं।देखिए-

" तब दूरियां मजबूरियां
बस, तनोंतक ही रहा करती हैं।"'वही, पृष्ठ संख्या **47)**

'तू ना मिली तो'गीत में भी कभी एक हो जाने की बात कहता है।कवि का स्पष्ट अभिमत है-

एक तन,एक मन,
प्राण एक,श्वास एक,श्वास की गति एक
गतिहोलय एक।" **(** वही,पृष्ठ संख्या **49)**

प्रेमी को प्रेयसी का बिरहविदग्ध कर देता है, ऐसे में कवि को बिरहाग् नजलाती रहती है। कवि नायक या प्रेमी चाहता है किप्रेयसीसे उसका मिलन हो जाए, ना मिलन या मिलने की दशा में प्रेमी सन्यासी बन जाने तक की चेतावनी देता है।कवि का भाव है-

" तू ना मिली तो हम
जोगी बन जाएंगे।
दाढ़ी तो बढ़ाली
अब, भगवेसिलाएंगे।
तू जो मिल जाए
तो दुनिया बसाएंगे
तू ना मिली तो बस
अलख जगायेंगे ।" (वही, पृष्ठ संख्या **48)**

कभी-कभी मनुष्य स्वयं को कोसने लगता है,उसे लगता है कि कहीं कोई उससे भूल हो गई,इसका दंड उसे इस रूप में मिल रहा है।'तुम्हारादर्द'कविता में भी कभी स्वयं अपने भाग्य कोकोसता दिखाई देता है।पत्नी से अलग होने का स्वयं का दुर्भाग्यमान रहे हैं, वह 'तुम्हारा दर्द' शीर्षक कविता की पंक्तियां में स्पष्ट झलकता है-

या की है दुर्भाग्यही।
दुख दर्द बांट सकता नहीं
प्यार के दो शब्द कह-
दर्द में /हमदर्द बन
कुछ काम आ सकता नहीं।" (वही, पृष्ठ संख्या **50)**

प्रेयसी के दुख,पीड़ा को नासह पाने की कसक उन्हें नित्य प्रति दिन सताती रहती है।अपने अंतस में प्रेम की टीस का गहनतम अनुभव बिरही प्रेमी के रूप में झलकता है।कभी का अक्षरश: कथन है-

" तुम कहोगी यहहै
कोरी कल्पना कवि की

LBP PUBLICATION

दर्द तो बस दर्द ही है
सत्य के ठोस धरातल पर जो दीख पड़ता
वह असहाय दर्द।" (वही, पृष्ठ संख्या 51)

कवि को कभी कभी अनुभव होता है कि प्रेयसी उनके प्रेम को असत्य समझती है,इसीलिए कभी कहना चाहता है,उनका प्रेम मीठा नहीं है।देखें काव्य पंक्तियां-

" दर्द तो सच
दर्द है /लेकिन
प्यार भी झूठा नहीं।" (वही, पृष्ठ संख्या 51)

सूफी दर्शन में तो व्यक्ति प्रेम में ही ईश्वर का रूप माना जाता है।मनुष्य से प्रेम का ना ही सच्चा प्रेमी माना गया है हिंदी साहित्य में भक्ति साहित्य के अंतर्गत प्रेमाश्रयीकविता इसका जीता जागता उदाहरण है।मलिक मोहम्मदजायसी कृत'पद्मावत', नूर मोहम्मदकी 'अनुराग बांसुरी',' कुतुबन'की मृगावती',शेख निसार यूसुफ जुलेखा, मंझन की मधुमालती'इत्यादि कृतियां विद्यमान हैं।यह काव्य कृतियां हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि हैं।कवि स्वयं के प्रेम को ईश्वर के समकक्षदेखते हैं।प्रेम में ईश्वर का निवास देखते हैं।कवि का मन्तव्य है-

"प्रिय की याद भी झूठी नहीं
वह प्यार की तड़पन
जो प्यार ही भगवान है
इस सृष्टि का वरदान।"(वही, पृष्ठ संख्या 52)

प्रेम में प्रिय के स्मरण का भाव आवश्यक होता है।कवि को प्रिय का स्मरण स्वाभाविक है।बिछड़ा हुआ प्रियतम प्रेयसी का स्मरण करेगा ही कभी उसे उसके पत्र के आने का संदेश मिल जाएगा।पत्र मिलते ही वह मिलन की अनुभूति मेंखो जाते हैं।''तुम्हारे प्यार की पाती'कविता में कवि का कथन है-

" मैंने कहा-
बुला ले अपनी यादों को
सजालेसेजफूलोंकी
न जाने किस घड़ी में
प्यार का अभिसार हो जाए।" (वही, पृष्ठ संख्या 53)

यहां का स्वर गीतकार नीरज जैसी साम्यता लिए हुए हैं।वह दर्द, तड़पन,वेदना की बेड़ियों को तोड़ डालना चाहते हैं।प्रेम की रसधार में सराबोर या रससिक्त होना चाहते हैं।शांता कुमार लिखते हैं-

" झटक दे वेदना की टीस,
भुला दे दर्द की तड़पन।

ना जाने कब किसी की याद
मधु की धार हो जाए।"(वही, पृष्ठ संख्या 53)

' मधु की धार'अर्थात प्रेम में निमग्न हो जाना है।कवि का प्रेमी मनप्रेम में डूबा ही रहना चाहता है। 'तुम्हारी याद आयी' कविता में जेल के सिख जो को तोड़ने के लिए व्याकुल हो जाता है, वह प्रेम में किसी प्रकार बंधन नहीं चाहते हैं स्मरण होना स्वाभाविक गुण है किसी फिल्म का गीत-" यादें/ आती हैं/

दिलो जानम के चले/ जानेकेबाद।"यहां कभी को उनके प्रिय की स्मृति सता रही है।कविता की काव्य पंक्तियां स्पष्ट हैं-

" प्रिय, तुम्हारी याद आई
जेल के इन सीखचों में
चांदनी जब कसमसाई
लौह के इन सीखचों में
बेड़ियाँ झंकारती हैं
कैदियों की टोलियां
मजबूर आहेंछोड़ती हैं।" (वही, पृष्ठ संख्या 57)

प्रेम में प्रिय के सानिध्य की उपादेयताभी मादकता उत्पन्न करती है,क्योंकि साथ रहेक्षणस्मृति बनकर आंखों के समक्ष उपस्थित हो जाते हैं।'मीत तुम्हारा'कविता में कवि की भाव व्यंजना कुछ इस प्रकार निकल कर सामनेआ जाती है-

" लाज प्यार की गरिमा में
सौजन्य लिए/ सौंदर्य लिए
दर्द जुदाई से
मुरझाए /अलसाई
मादक- मादक।"

' तुम्हारीयाद आई'और 'तुम्हारी याद' एक ही भाव भूमि पर लिखी कविताएं हैं।'तुम्हारी याद कविता में फिर से बिछड़ने की तड़प, बिरहाग्नि,टीसएवं हूक कवि के हृदय को व्याकुलकर देती है इस संदर्भ में 'तुम्हारी याद' कविता की काव्य पंक्तियों के आधार परकवि के मनोज जगत को समझा जा सकता है कविता कीकाव्य पंक्तियां देखिए-" प्रिये!/ तुम्हारी याद की
यह आग /यह दर्द की टीस
यह हूक कितनी पैनी है!
इतनी दूर हो तुम,
इन लौहदरो- दीवारोंसे,
इन पत्थरों की सीमेंट पुती
ऊंची दीवारों से
इन काले भयावने द्वार से।

इसचोरों, डाकूओं, बटमारोंकी
अजीब बस्ती से
दूर, बहुत हो तुम।" (वही, पृष्ठ संख्या 63)

पद दलित, पथभ्रष्ट, अन्यायी, अत्याचारी इत्यादि लोगों के बीच जीवन का एक नया अनुभव मिल रहा है।लेकिन प्रेम की लौमेरे हृदय में सदैव तुम्हारे लिए जलती रहती है।ऐसे में भी मैं तुम्हें विस्मृतिनहीं कर पाता हूं।

मेरे अंतस की क्रोड मेंआपके अन्यत्र किसी अनिका प्रेम नहीं समाया हुआ।इस हृदय में आप ही रचे बसे हैं।'तुम्हारी याद' कविता में कवि का कथन है-

" एक ही दिल
दो जगह
दो छोरों पर
एक समान ही धड़कता है।" (वही,पृष्ठ संख्या 64)

' तुम्हारे प्यार की पाती'कविता संग्रह का तीसरा खंड है- कश्मीर आंदोलन 1953हिसार जेल में 19 वर्ष की आयु में लिखी कविताएं हैं।इस खंड की कविताओं में'कारा की काल कोठरी में', ' रक्षाबंधन', ' जन्माष्टमी', ' बंधन की रक्षा', ' अरे,पतंगों'एवं'मैं नीचे पथ काअविचल पंथी'हैं।'कारा कीकाल कोठरी में'कवि कारागार को भी घर मांगता है वहां भी वह जीवन के आनंद की अनुभूति कर लेता है।कवि का भाव कथन है-" कारा की काल कोठरी में

जीवन का अनुभव पाया,
सब कुछ छिनजाने पर भी,
आनंद मधुर पाया।"

कर्तव्य पथ पर सदैव आगे बढ़ते रहना चाहते हैं,मातृभूमि की प्रेम के लिए वह स्वयं का बलिदान करने से पीछे नहीं हटेंगे।'अरे,पतंगों'कविता में कवि का भाव देखा जा सकता है-

"दीपक लौ कर्तव्य भी मेरा,
बढ़ना ही सदा मुझ को होगा।
निज प्रेम निभाने की खातिर
तिल तिल कर जलना ही होगा।
पंथी आगे बढ़ता जाता,
ठुकरा कर सब बाधाओं को।" (वही,पृष्ठ संख्या 79)

निष्कर्षत: कवि ने निजत्व प्रेमया व्यक्ति प्रेम कीअनुभूति को कविता में संगुफित करसामाजिक रूपांतरण कर दिया है, उनकी कविता में प्रेम की गहनता, वेदना का अर्थ गांम्भीर्य, निजता का समाहार है।कवि का प्रेम यही तक सीमित नहीं रहता है, वह

देश प्रेम की भावना तक अपनी गहरी पैठ बनाता जाता है, इसी प्रेम के कारण कवि को'कारागार'कामुक भी देखना पड़ता है, वहां की यातना भी सहनी पड़ती है।'कारागार' में रहकर ही'अपनी'पत्नी से भी वियुत होने पर, उन्हें पत्नीप्रेयसीकी स्मृति सताती रहती है।यही स्मृति घनीभूत प्रेम में परिवर्तित हो गयी।जोउनका पीछा छोड़ने के लिए तैयार नहीं है, उन्हें अपने प्रेम को प्रमाणित करने के लिए प्रिय को पत्र भी लिखने पड़ते हैं।उन पत्रों में प्रेम के प्रति वचनबद्धता की सुगंध अनुभव होती है।कवि का प्रेम यही तक सीमित नहीं रहता है, उनकी प्रेम का विस्तार होता जाता है।उनका प्रेम विस्तृत होकर संवेदना के धरातल पर पहुंच जाता है।वह निर्धन, वंचितएवं अंतिम पंक्ति में खड़े लोगों के प्रति बढ़ जाता है, वह सामाजिक असमानता,गैरबराबरी, अन्याय,शोषण,अत्याचारके विरुद्ध अपनी आवाज उठाते हैं, और शासन- प्रशासन, तुष्टीकरण, कूटनीतिकरने वालेनेताओं के विरुद्ध डटकर खड़े हो जाते हैं।आर्थिक समान तालाने के लिए योजनाओं के नाम, गरीबों का शोषण वोट की राजनीति करने वाले नेताओं को कटघरे में खड़ा करते हैं, और स्वयं को नेता से पहले संवेदनशील कवि कहते हैं।यह संवेदनशीलता कवि के अंतसमेंऔर आचरण में विद्यमान है।इस संग्रह की समस्त कविताएं पठनीय एवं संग्रहणीय हैं, अंतर्मन को स्पर्श करती चलती हैं।

संदर्भ:

1.तुम्हारे प्यार की पाती: शांता कुमार,संस्करण2007,पृष्ठ संख्या 09
2.वही,पृष्ठ संख्या15
3.वही, पृष्ठ संख्या31
4. वही, पृष्ठ संख्या 34
5.वही, पृष्ठ संख्या 35
6.वही, पृष्ठ संख्या46
7.वही, पृष्ठ संख्या 49
8.वही, पृष्ठ संख्या 48
9.वही, पृष्ठ संख्या 50
10.वही ,पृष्ठ संख्या51
11.वही, पृष्ठ संख्या 51
12.वही, पृष्ठ संख्या52
13. वही, पृष्ठ संख्या 53
14.वही, पृष्ठ संख्या 53
15.वही, पृष्ठ संख्या 57
16.वही, पृष्ठ संख्या 63
17.वही, पृष्ठ संख्या 64
18.वही, पृष्ठ संख्या 77
19.वही, पृष्ठ संख्या 79

LBP PUBLICATION